B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

स्वप्न विषय क्या? फ्रायड के स्वरूप सिद्धांत? युंग के स्वप्न सिद्धांत से किस प्रकार भिन्न है?

स्वप्न (Dream)

(Nature of dream)

स्वप्न का स्वरूप — हम सभी स्वप्न देखते हैं। कुछ प्रिय होते हैं तथा कुछ अप्रिय। स्वप्न में हम प्रेम, भय, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष सबका अनुभव करते हैं। स्वप्न की दुनियाँ हमें बड़ी विचित्र लगती है और जागने पर हम उत्सुक हो जाते हैं यह जानने के लिये स्वप्न क्यों आते हैं या देखे गये स्वप्न के पीछे कौन का कारण या रहस्य छिपा होता है।

प्राचीन काल से ही इसके विषय में माथा-पच्ची होती आई है और इसकी व्याख्या देने का प्रयास किया जाता रहा है। प्राचीन विद्वानों का मत था कि नींद में मनुष्य की आत्मा शरीर से अलग होकर इधर-उधर घुमती है और वह जो कुछ देखती या सुनती है वही स्वप्न है। प्रसिद्ध दार्शनिक हिपोक्रेटस का भी यही मत था। इसी के आधार पर आज भी कुछ लोग मानते हैं कि सोए हुए व्यक्ति को एकाएक नहीं उठाना चाहिए। उन्हें धीरे से जगाना चाहिए ताकि घुमती हुयी आत्मा को स्थूल शरीर में लौटने का समय मिल सके अन्यथा आत्मा बाहर टहलती रह जायेगी और व्यक्ति की मौत हो जायेगी।

कुछ विद्वानों का मत है कि स्वप्न किसी दैवि शक्ति के कारण आते हैं। जब दैवि शक्ति प्रसन्न रहती है तो हम प्रिय स्वप्न देखते हैं और जब रुष्ट रहती है तो अप्रिय स्वप्न देखते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि दैवि शक्ति स्वप्न के माध्यम से हमें भविष्य की घटनाओं

Scanned with CamScanner

के विषय में भी संकेत देती है। ऐसा अंधविश्वास विस्तृत है और लगभग सभी देशों में पाया जाता है। सत्य हरिश्चन्द्र नाटक हम देखते हैं या पढ़ते हैं तो पाते हैं कि स्वप्न देखने के बाद ही राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य दान दे दिया और एक साधारण व्यक्ति की तरह जीवन बिताने के लिये तैयार हो गए। यह अंधविश्वास नहीं तो और क्या हो सकता है। कुछ लोग ऐसे भी थे जो दूसरों को स्वप्न का अर्थ समझाकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

कुछ भारतीय दार्शनिक मानते हैं कि आत्मा चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने के बाद मनुष्य योनि में जन्म लेती है। आत्मा अमर होती है। अतः शरीर के नष्ट होने के बाद भी एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। यह अपने में विभिन्न योनियों के अनुभव को समेटे रहती है। स्वप्न में यह विभिन्न योनियों के अनुभवों को स्मरण करती है। स्वप्न में हम उड़ते हुए इसलिये पाते हैं कि पहले जन्म में हमारी आत्मा पृथ्वी के शरीर में रही होगी।

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों में Fisher ने स्वप्न का अर्थ दिया है कि निद्रावस्था में मानसिक क्रियाएँ लगातार चलती रहती हैं और स्वप्न इन्हीं लगातार होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की एक अवस्था विशेष है। Brown ने बताया है। सपने दो विभाग हैं- जिनका अनुभव हम सबको प्रतिरात होता है और जबहम जागते हैं तो उसका त्रिआयामिक स्वप्न स्वरूप हमें स्पष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner